

YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION - 2026

HINDI RECITATION - INTERMEDIATE

माँ, कह एक कहानी

- मैथिलीशरण गुप्त

"माँ, कह एक कहानी।"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?"
"कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटा!
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी?
राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी।"
"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ, सुरभि मनमानी।"
"जहाँ सुरभि मनमानी?
हाँ, माँ, यही कहानी।"
"वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-विन्दु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी।"
"लहराता था पानी?
हाँ, हाँ, यही कहानी।"
"गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा, बिध्द होकर खर-शर से,
हुई पक्ष की हानि।"
"हुई पक्ष की हानि?
करुणा-भरी कहानी!"
"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य-सिद्धि का मानी।"
"लक्ष्य-सिद्धि का मानी?
कोमल-कठिन कहानी।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी।
तब उसने, जो था खगभक्षी –
हठ करने की ठानी।"
"हठ करने की ठानी?
अब बढ़ चली कहानी।"
"हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।"
"सुनी सभी ने जानी?
व्यापक हुई कहानी।"
"राहुल, तू निर्णय कर इसका—
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्णय, जय हो जिसका।
सुन लूँ तेरी बानी।"
"माँ, मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।
कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।"
"न्याय दया का दानी?
तूने गुनी कहानी।"

★ ★ ★

YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION 2026

HINDI RECITATION - SENIOR

मैं नीर भरी दुःख की बदली

— महादेवी वर्मा

मैं नीर भरी दुःख की बदली !
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !
मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !
मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिन्ता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नवजीवन-अंकुर बन निकली !
पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अन्त खिली !
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली !



YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION - 2026

ENGLISH RECITATION - INTERMEDIATE

THE BROOK

- Alfred Tennyson

I come from haunts of coot and hern,
I make a sudden sally,
And sparkle out among the fern,
To bicker down a valley.

By thirty hills I hurry down,
Or slip between the ridges,
By twenty thorps, a little town,
And half a hundred bridges.

Till last by Philip's farm I flow
To join the brimming river,
For men may come and men may go,
But I go on forever.

I chatter over stony ways,
In little sharps and trebles,
I bubble into eddying bays,
I babble on the pebbles.

With many a curve my banks I fret
By many a field and fallow,
And many a fairy foreland set
With willow-weed and mallow.

I chatter, chatter, as I flow
To join the brimming river,
For men may come and men may go,
But I go on forever.



YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION - 2026

ENGLISH RECITATION - SENIOR

TO AUTUMN

- John Keats

Season of mists and mellow fruitfulness,
Close bosom-friend of the maturing sun;
Conspiring with him how to load and bless
With fruit the vines that round the thatch-eves run;
To bend with apples the moss'd cottage-trees,
And fill all fruit with ripeness to the core;
To swell the gourd, and plump the hazel shells
With a sweet kernel; to set budding more,
And still more, later flowers for the bees,
Until they think warm days will never cease,
For summer has o'er-brimm'd their clammy cells.

Who hath not seen thee oft amid thy store?
Sometimes whoever seeks abroad may find
Thee sitting careless on a granary floor,
Thy hair soft-lifted by the winnowing wind;
Or on a half-reap'd furrow sound asleep,
Drows'd with the fume of poppies, while thy hook
Spare the next swath and all its twined flowers:
And sometimes like a gleaner thou dost keep
Steady thy laden head across a brook;
Or by a cyder-press, with patient look,
Thou watchest the last oozy hours by hours.

Where are the songs of spring? Ay, Where are they?
Think not of them, thou hast thy music too,—
While barred clouds bloom the soft-dying day,
And touch the stubble-plains with rosy hue;
Then in a wailful choir the small gnats mourn
Among the river shallows, borne aloft
Or sinking as the light wind lives or dies;
And full-grown lambs loud bleat from hilly bourn;
Hedge-crickets sing; and now with treble soft
The red-breast whistles from a garden-croft;
And gathering swallows twitter in the skies.



YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION - 2026
ODIA RECITATION – INTERMEDIATE

ସନ୍ଧ୍ୟା

- ମଧୁସୂଦନ ରାଓ

ଅସ୍ତହେଲା ଦିନମଣି ହେଲା ଦିନ ଶେଷ,
ଆସିଲା ରଜନୀରାଣୀ ଧରି କଳା ବେଶ।
ସନ୍ଧ୍ୟା ହେଲା, ସନ୍ଧ୍ୟା ହେଲା ବୋଲି ପକ୍ଷିଗଣ
ରାବ ଦେଇ ଯେଉଁ ବାସେ କରନ୍ତି ଗମନ।
ଧୂଳି ଉଡ଼ାଇଣ ଦାଣ୍ଡେ କରି ହମ୍ପା ରଡ଼ି
ଯାଉଛନ୍ତି ଗୋରୁପଲ ଗୋଠରୁ ବାହୁଡ଼ି।
ହଳକାମ ସାରି ତଷା ମହା ଆନନ୍ଦରେ
ନାନାରଙ୍ଗେ ଗୀତ ଗାଇ ବାହୁଡ଼ଇ ଘରେ।
ଚାହୁଁ ଚାହୁଁ ଅନ୍ଧକାର ଘୋଟଇ ଗଗନ,
ଆବରଇ ଜଳ ଛଳ ପର୍ବତ କାନନ।
ରତ୍ନଦୀପାବଳୀ ପ୍ରାୟେ ତାରା କୋଟି କୋଟି
ଜଳୁଛନ୍ତି ଆକାଶରେ ହୋଇ ଗୋଟି ଗୋଟି।
ଭାଙ୍ଗି ଯାଇଅଛି ଏବେ ଦିବସ ଗହଳ,
ନାହିଁ ଆଉ ଏ ଭୁବନେ ଜୀବର ଚହଳ।
ଦିନ-ଶ୍ରମ ଅନ୍ତେ ବସି ନିଜ ନିଜ ଘରେ
ବିଶ୍ରାମ ଲୋଡ଼ନ୍ତି ସର୍ବେ ଆକୁଳ ଅନ୍ତରେ।
ଧୀରେ ଆସୁଅଛି ନିଦ୍ରା, ନରନାରୀଗଣ
ତାହାର ପରଶେ ଏବେ ମୁଦିବେ ନୟନ।
ଦିନ ଅନ୍ତେ ରାତି ଆସେ ତାହାଙ୍କ ବିଧାନେ,
ସୁମରି ସେ ବିଧାତାଙ୍କୁ ଆହେ ଶିଶୁମାନେ;
କରଯୋଡ଼ି କର ଏବେ ସନ୍ଧ୍ୟାର ବନ୍ଦନ,
ବୋଲ, ଧନ୍ୟ ଧନ୍ୟ ପ୍ରଭୁ ଭୁବନକାରଣ।

YMCA INTER-SCHOOL LITERARY COMPETITION - 2026

ODIA RECITATION – SENIOR

ଉଠ କଂକାଳ

- ଗୋଦାବରୀଶ ମହାପାତ୍ର

ଦୁର୍ଗମଗିରି ଦୁର୍ଗପ୍ରାଚୀର ଜୀର୍ଣ୍ଣ ଦୁଆରେ ବସି
ତାଙ୍କେ ତାନ୍ତ୍ରିକ ମନ୍ତ୍ରସାଧନେ – ଜାଗ୍ରତ ପୁରବାସୀ
ପୃଥ୍ଵୀ ବିଦାରି ବାରବାଟୀ ମଢ଼ା ଉଠ ଉଠ ଚଞ୍ଚଳ
ଖୋରଧାର ଶତ ସରଦାରଶିର କର ଉନ୍ନତତର ।
ଉଠ କଂକାଳ, ଛିଡ଼ୁ ଶୃଙ୍ଖଳ ଜାଗ ଦୁର୍ବଳ ଆଜି
ଉଠୁ ଗତ ଗୌରବ, ହୃତ ଗୌରବ, ମୃତ ଗୌରବରାଜି ।
ମେଘାସନ ତଳ ମନ୍ତ୍ରନିନାଦ ବାଜେ ଫୁଲଝରବୁକେ
ରାଇବଣିଆର ରଣସଙ୍ଗୀତ ଗଞ୍ଜାମପଥେ ତାଙ୍କେ ।
ସିଂଭୁମ କହେ ମରଣଦୁଆରେ ବିଶାଖାପାଟଣା ଚାହିଁ
ସନ୍ତାନମୁଖେ, ଶମଶାନବୁକେ ପ୍ରାଣ ସଙ୍କେତ ନାହିଁ ।
ଉଠ ଦୁର୍ବଳ ଜାଗ କଂକାଳ, ଛିଡ଼ୁ ଶୃଙ୍ଖଳ ଆଜି
ଉଠୁ ଗତ ଗୌରବ ହୃତ ଗୌରବ ମୃତ ଗୌରବରାଜି ।
ଖଣ୍ଡାକୁଶଳ ଖଣ୍ଡାୟତର ଦୁର୍ବାର କରବାଳେ
ଅଜେୟ ବଙ୍ଗବାହିନୀ ଶୋଇଲେ ଶତଗଡ଼ ପ୍ରାନ୍ତରେ
ଗଉଡ଼ଭୁବନ ହେଲା ପଦାନତ, ମଗଧ ପାଇଲା ଲୀନ
ପ୍ରତାପୀ ପୁଷ୍ପମିତ୍ର ହଟିଲା ଦେଇ ଉକୁଳେ ରଣ ।
ଜାଗ କଂକାଳ ଜାଗ କଂକାଳ ଜାଗ କଂକାଳ ଆଜି
ଉଠୁ ଗତ ଗୌରବ ହୃତ ଗୌରବ ମୃତ ଗୌରବରାଜି ।
ହାଡ଼ପାଶୁ ଆଜି ଭାଷା ବହିଆସୁ, ଫୁଟୁ ମଢ଼ା ମୁଖେ ହସ
ଭଗ୍ନ ଏ ଗଡ଼ ମନ୍ଦିରେ ଶୁଭ୍ର ଦୁନ୍ଦୁଭି ଅହର୍ନିଶ ।
ଶମଶାନଧୂଳି ଅଞ୍ଜଳି ଭରି ନିଅ ପୁର ବାସିଜନ
ଲକ୍ଷ ଜୀବନ ସାକ୍ଷ୍ୟଦେବ ରେ ଗୌରବେ ମହୀୟାନ,
ଉଠ କଂକାଳ, ଭେଦି ମହାକାଳ ଜାଗ ଦୁର୍ବଳ ଆଜି
ଉଠୁ ଗତ ଗୌରବ, ହୃତ ଗୌରବ ମୃତ ଗୌରବରାଜି ।
ବେଳ ନାହିଁ ବେଳ ନାହିଁ କଂକାଳ ଟେକ ଚଞ୍ଚଳ ମଥା
ବିଦାରି ଉପଳ ନିର୍ମଳ ତବ ପିଞ୍ଜରୁ ଉଠୁ ବ୍ୟଥା
ବାଜିଉଠୁ ବାରେ ମରଣ ବିଜୟୀ ବଂଶୀ ସେ ବୁକୁଡ଼ଲେ
ଧୂର୍ଜଟୀଜଟା ଛୁଟୁ କମ୍ପାଇ ଯୌବନ କୁଡ଼ୁହଲେ ।
ଉଠ କଂକାଳ ଉଠ ଦୁର୍ବଳ ଜାଗ କଂକାଳ ଆଜି,
ଉଠୁ ଗତ ଗୌରବ, ହୃତ ଗୌରବ ମୃତ ଗୌରବରାଜି ।